ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-18 दिसम्बर-II, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

आध्यात्मिक संस्कृति से ही विश्व शान्ति - डॉ. महेश शर्मा

नई दिल्ली। समाज के सभी क्षेत्रों में शान्ति, प्रेम, सद्भाव और विकास लाने हेतु सार्वभौमिक नैतिक मूल्य, आध्यात्मिक संस्कृति, पारस्परिक समझ और स्वस्थ जीवन शैली को अपनाना आवश्यक है। उक्त उद्गार भारत सरकार के संस्कृति, पर्यटन व नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा ने ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के शताब्दी समारोह के अवसर पर उनके जीवन द्वारा भारत और विश्व के अन्य देशों में असाधारण योगदान और उनके जीवन को दर्शाने वाली तीन पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए वहां उपस्थित दिल्ली और एनसीआर के बुद्धिजीवियों, गणमान्य व्यक्तियों एवं पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये।

दादी जानकी के जीवन पर केन्द्रित किताबों का विमोचन करते हुए राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा, ब्रिटिश पत्रकार नेविल, श्रीमति लिज़, ब्र.कु. शिवानी, सुरेश ओबरॉय व ब्र.कु. बृजमोहन।

मलेशिया। भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् अभिवादन करते हुए क्षेत्रिय संचालिका ब्र.कु. मीरा तथा अन्य।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था मानवता के नैतिक चरित्र एवं सकारात्मक जीवन निर्माण के लिए काम कर रही है जो वर्तमान समय की मांग है। ब्रिटिश पत्रकार नेविल और श्रीमति लिज हॉजकिन्सन द्वारा दादी जानकी के जीवन पर लिखी दो पुस्तकों `आई नो हाऊ टू लिव, आई नो हाऊ टू डाई' और `दादी जानकी-ए सेन्चुरी ऑफ सर्विस' एवं स्वयं दादी जानकी की रचना `प्रेम और शान्ति का मार्ग' पुस्तकों की सामग्री की सराहना करते हुए डॉ. शर्मा ने कहा कि पुस्तक में प्रस्तुत दादी जानकी के वास्तविक जीवन के उदाहरण और कहानियां आध्यात्मिक समझ, आंतरिक

- शेष पेज 11 पर

दादी जानकी के जीवन पर केंद्रित तीन पुस्तकों का हुआ लोकार्पण

1.'आई नो हाऊ टू लिव, आई नो हाऊ टू डाई'

2.'दादी जानकी-ए सेन्चुरी ऑफ सर्विस'

3.'प्रेम और शान्ति का मार्ग'

मूल्यों का समावेश बनाएगा बेहतर प्रशासक : धकाल

शांतिवन। प्रशासन मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। आज विभिन्न सरकारी पदों की ज़िम्मेवारियां तो सौंप दी जाती हैं परन्तु उसमें मूल्यों का समावेश कैसे हो यह ज्ञान नहीं दिया जाता। यही कारण है कि आज जनता किसी तरह के शासन से संतुष्ट नहीं है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में प्रशासक प्रभाग द्वारा `राजयोग द्वारा मूल्यनिष्ठ प्रशासन व्यवस्था' विषय पर आयोजित सम्मेलन में भारत में नेपाल के राजदूत कृष्णा प्रसाद धकाल ने व्यक्त किये।

प्रशासक प्रभाग के त्रिदिवसीय सम्मेलन में शरीक हुए 2000 लोग

संयम से स्वयं व समय पर होता सुशासन

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि एक अनुशासित प्रशासक ही अच्छी शासन व्यवस्था को कायम रख सकता है। यदि बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था चाहिए तो उसके लिए सबसे पहले स्वयं पर शासन करने की पद्धति सीखनी होगी। राजयोग के माध्यम से हम अपने विचारों को संयमित रख सकते हैं। संयम से स्वयं व समय पर सुशासन हो सकता है। हमारे जीवनचर्या में राजयोग मडिटेशन शामिल हो तो यह संभव हो सकेगा। उन्होंने कहा कि समय बदलाव का चल रहा है तो हमें अपने जीवन को सशक्त बनाना ही होगा।

उन्होंने कहा कि प्रशासन को सेवान्मुखी बनाने तथा मानवता की सेवा के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति को शक्तिशाली बनाने के लिए उसमें आध्यात्मिकता का होना ज़रूरी है। अगर आज भी प्रशासन में आध्यात्मिकता का समावेश हो जाए तो सारी शासन व्यवस्था बहुत ही जल्द अच्छी हो जाएगी। ब्रह्माकुमारी संस्थान में आने के बाद महसूस होता है कि ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था अगर प्रशासन तंत्र में आ जाये तो पूरा समाज मूल्यनिष्ठ बन जायेगा। इस अवसर पर आन्ध्र प्रदेश,नालकोंडा के अतिरिक्त जिला कलेक्टर एन.सत्यनारायण ने कहा कि बाहरी क्रियाएं करते हुए हम बाहर तो शासन चाहते हैं लेकिन अपने आप को शासन में नहीं रख पा रहे हैं क्योंकि अंदर झाँकने का ज्ञान ही नहीं है। यहां इस शिविर के दौरान जो बातें बताई गई हैं वे आंतरिक सुंदरता को निखारने में बहुत ही उपयोगी हैं।

सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कृष्णा प्रसाद धकाल, ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. रोहित, ब्र.कु. हरीश व अन्य।

प्रशासक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. आशा ने कहा कि आज फालतू बातों में हमारा समय बहुत जाता है। अच्छे प्रशासक को चाहिए कि वह जो काम जिस समय चाहिए वो कर दे। छोटों को प्यार, बड़ों को सम्मान और साथियों को सहयोग, जिस प्रशासक ने अपना यह नियम बना लिया है, उसकी उन्नति को कोई रोक नहीं सकता। इस ईश्वरीय ज्ञान द्वारा हम ये गुण बहुत ही सहजता से धारण कर सकते हैं।

प्रशासक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. अवधेश बहन ने कहा कि जीवन में कर्मेन्द्रियों का प्रशासन ही मूल्यनिष्ठ प्रशासन का आधार-

शेष पेज 7 पर...